वर्ष 3, अंक 2 फरवरी 2019
जे 7 श्रीरामनगर रायपुर (छ.ग.)
आर एन आई पंजीकरण क्रमांक
CHHHIN/2017/72506

किलोल

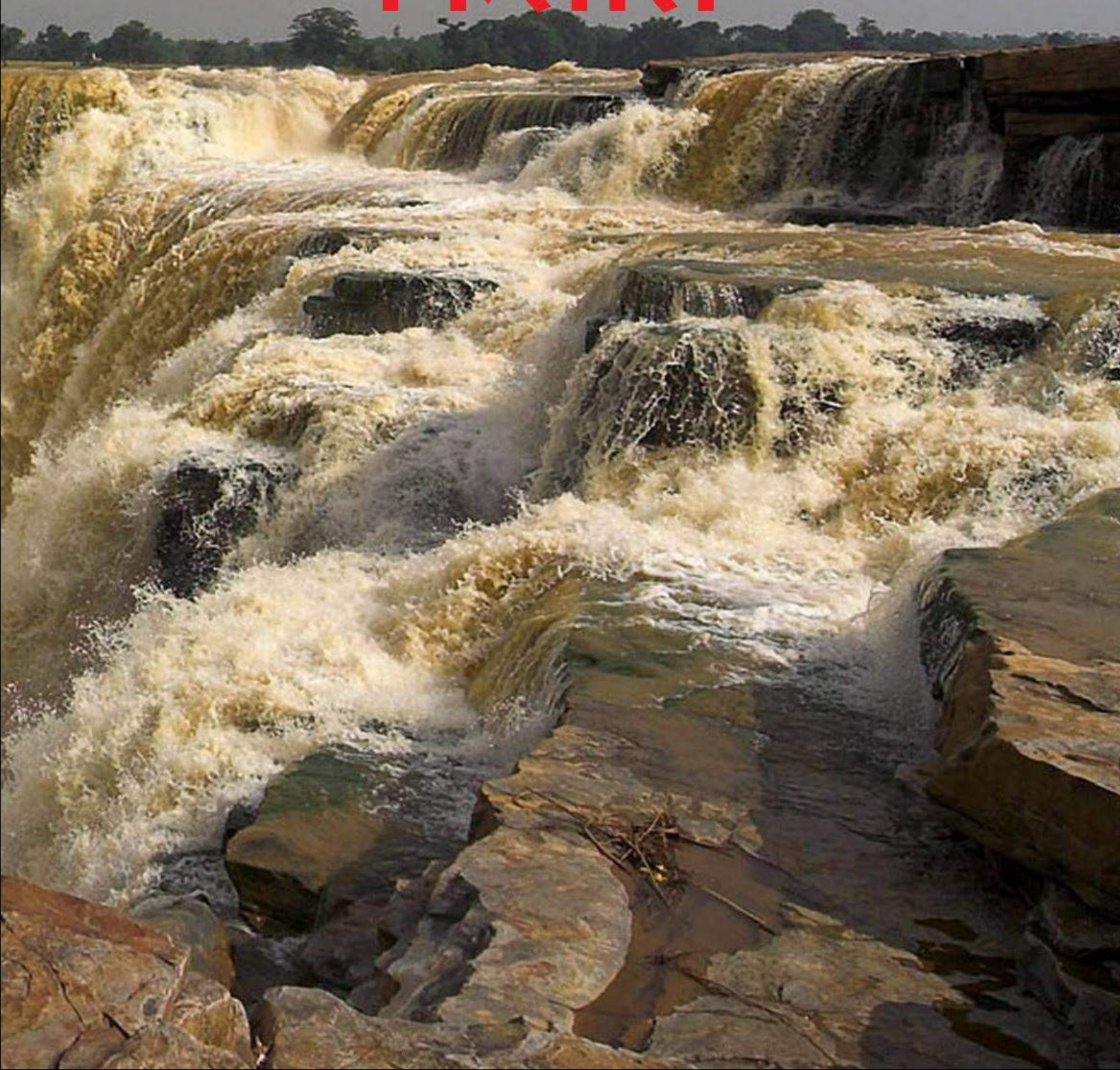

संपादक - डा. आलोक शुक्ला
सह-संपादक - एम. सुधीश

संपादक मंडल -
राजेंद्र कुमार विश्वकर्मा, शेख अजहरुद्दीन

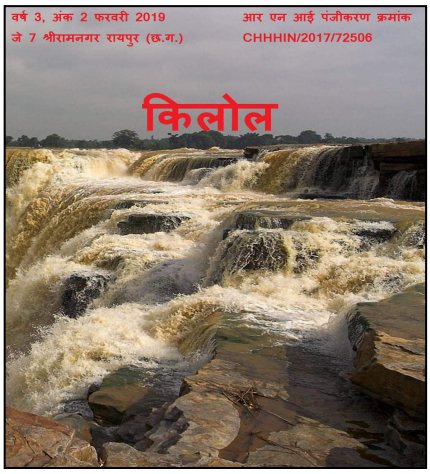

प्यारे बच्चों,

जनवरी चला गया और फरवरी का महीना आ गया. अब तुम परीक्षाओं की तैयारियों में जुट गए होगे. हमारी शुभकामना है कि खूब पढ़ो और खूब आगे बढ़ो. साथ में मनोरंजन के लिये किलोल भी ज़रूर पढ़ते रहना. कुछ शिक्षकों ने किलोल को डाउनलोड करके बच्चों में नि:शुल्क वितरित करना भी प्रारंभ कर दिया है. बेलगहना से पुष्पेन्द्र तिवारी जी ने किलोल के नि:शुल्क वितरण की फोटो भेजी है, जिन्हें हम इस अंक में सधन्यवाद प्रकाशित कर रहे हैं. मेरा सभी शिक्षकों और शिक्षा विभाग के अधिकारियों से अनुरोध है कि इस पत्रिका का अधिक से अधिक उपयोग करने के लिये प्रत्येक स्कूल में बच्चों को इसे छापकर देने के बारे में विचार करें. पत्रिका की पी.डी.एफ. को डाउनलोड करके स्थानीय स्तर पर छपवाया जा सकता है और इसे बच्चों में नि:शुल्क वितरित किया जा सकता है. इसके लिये समुदाय से कुछ चंदा भी लिया जा सकता है और सर्व शिक्षा अभियान में शाला विकास की राशि का उपयोग करने पर भी विचार किया जा सकता है. किलोल के लिये कहानी, गीत, कविताएं, पहेलियां, चुटकुले आदि का हमेशा की तरह स्वागत है. हमेशा की तरह किलोल http://alokshukla.com/Books/BookForm.aspx?Mag=Kilol पर नि:शुल्क डाउनलोड के लिये उपलब्ध है.

आलोक शुक्ला

मम्मी - पापा हम बड़े हो गए

लेखक - निशांत शर्मा

याद है मम्मी आपको जब में छोटा था तो आप स्कूल के लिए मुझे तैयार किया करते थे. ठण्ड न लगे इसलिये नहलाकर टावेल के भीतर छिपा लिया करते थे. गरम पराठे सब्जी टिफिन में जोड़ दिया करते थे. जूते पालिश करके अप-टु-डेट स्कूल के लिये तैयार किया करते थे. रिक्शे को आने में यदि ज़रा भी देर हो जाये तो पापा स्कूटर से स्कूल छोड़ने को कहते थे. स्कूल से जैसे ही आते थे तो हमारे गंदे कपड़े, मोजे, जूते अपने हाथ से उतारकर घर पर रखे साफ सुथरे कपड़े पहनाते थे और अपने हाथों से गरमागरम खाना खिलाते थे. सचमुच वैसी भूख जिसमें पेट आपके हाथ से खिलाए निवालों से भर जाया करता था आज तक वैसी भूख को तरसते हैं. थोड़े बड़े हुए तो हायर एजुकेशन के लिये आपने हमें कालेज भेज दिया. न हमें अच्छा लगता था कालेज के हास्टल में न आपको हमारे बिना नींद और

भूख... पर क्या करें अपने बच्चों को आपको लायक जो बनाना था. हॉस्टल के फोन से कभी-कभी कॉल कर लेते थे आप दोनो को, तो दिन भर अच्छा महसूस करते थे. जैसे-जैसे आप दोनो के बिना कॉलेज की पढ़ाई पूरी की तो सामेने एक नया झमेला जॉब का... जैसे-तैसे दूसरे शहर में जॉब तो मिली पर आपसे कोसों दूर होते चले गए. थोड़े दिनो बाद शादी हो गई फिर बच्चे हो गए और बीबी बच्चो में हम इतने लीन हो गए कि आपसे बातें-मुलाकातें कम हो गईं. आज आप बूढ़े हो गए और हम बड़े हो गए पर आज भी मन करता है कि आप बचपन जैसे ही हमे तैयार करके ऑफिस भेजें. आज भी मन करता है कि आप बचपन में जैसे अपने हाथ से खाना खिलाते थे वैसे ही हमारे ऑफिस से घर आने पर हमें खाना खिलाएं.... जब पापा को सब्ज़ी मण्डी सब्ज़ी लेने जाते हुए और आपको घर का सारा काम करते हुए देखते-सुनते हैं तो लगता है कि क्या हमारे लिये आपके प्रति कोई कर्तव्य एवं दायित्व नहीं है पर क्या करें मम्मी-पापा शायद ये ही ज़िन्दगी है. सच में लगता है अब हम बड़े हो गए....

Union is strength

Author - Dilkesh Madhukar

Once an old man who thought he would not live long called his sons. "Bring me some sticks", he said. The sons did so. The father tied the sticks together and gave the bundle to his youngest son. "Can you break that bundle of sticks", he asked. The boy tried to do so. "No father, I can't," he said. "Then give the bundle to your brothers, perhaps one of them can do it," The brothers all tried, but with the same result.

Then the old man untied the bundle and gave one stick to each son and said "Can you break one stick."

"Of course", said the young man and each broke his stick. "You see", said the father. "If you are united and live in friendship, you will be stronger than any enemy."

Moral - Union is Strength.

Meanings of difficult words -

bundle - गट्ठा
Stick - लकड़ी
Tied - बंधा हुआ
of course - अवश्य ही
break - तोड़ना
United - एकता
friendship – दोस्ती
stronger - मजबूती
enemy - दुश्मन
union - एकता
strength - ताकत

गुड टच - बैड टच

लेखिका - डा. अणिमा उपाध्याय

बच्चों आपको यह जानकारी अवश्य होनी चाहिये कि आपके लिए क्या अच्छा है व क्या बुरा। ज़्यादातर माता-पिता व शिक्षक यह तो बताते हैं कि पढ़ाई करना, सच बोलना, कसरत करना, फल और सब्जियां खाना अच्छी आदत होती है व बुरा व्यवहार करना, झूठ बोलना, चोरी करना इत्यादि बुरी आदतें होती हैं. किन्तु आज के इस दौर में एक और बात है जो बहुत ही महत्वपूर्ण एवं जानने योग्य है और वह है गुड टच या बैड टच अर्थात अच्छा स्पर्श या बुरा स्पर्श. अब यह जानना भी उतना ही ज़रूरी है की इन दोनें ही टच अर्थात स्पर्श में अन्तर क्या है...

तो बच्चों आपको उदाहरण के साथ दोनों टच का अन्तर समझाते हैं.... जब आपके माता व पिता आपसे प्यार जताते हैं तो जो अनुभूति आपको होती है वह है अच्छा टच क्योंकि उनके छूने से आपको खुशी मिलती है. वे कभी भी आपको दर्द नहीं

पहुंचाते या ऐसी जगह नहीं छूते जिससे आपको तकलीफ हो. उनके समीप आने से व उनके स्पर्श से आप सुरक्षित महसूस करते हैं, तो यह हुआ अच्छा स्पर्श या गुड टच.

अब करते हैं बैड टच की बात, यह वह टच है जिससे आपको डर लगे या जैसा ऊपर बताया है उससे अलग लगे. इसे और विस्तार से कुछ यूं समझा जा सकता है कि जब कोई आपको जबर्दस्ती गोद में बिठाए, चिपकाए, दबोचे या चुंबन करे. आपके कपडों के अंदर छूने की कोशिश करे या उन अंगों तक पहुंचने की कोशिश करे जिन्हें आपके माता-पिता व शिक्षक सदैव ढंक कर रखने की हिदायत देते हैं, तो समझ लें कि यह बैड टच है.

बच्चों बैड और गुड टच समझने के बाद अब यह भी ज़रूरी होता है कि आपको एसा करने वालों से डरना नहीं चाहिये। यदि आपके साथ कोई भी ऐसा करने की कोशिश करता है चाहे छूने वाला वह व्यक्ति आपका शिक्षक हो, रिश्तेदार हो, आपका मित्र या उनका अभिभावक हो अर्थात कोई भी हो तो आपको इसकी खबर अपने माता-पिता को तुरंत देनी चाहिये. आपको यह बात बताने में तनिक भी शर्माने या घबराने की ज़रूरत नहीं है क्योंकि इसमें आप कतई दोषी नहीं हैं. हो सकता है कि वह व्यक्ति आपको डराता हो या लालच देता हो कि चॉकलेट देगा या घुमाने ले जायेगा तो ना तो उसके झांसे में आयें ना ही उससे डरें. आपका डर या लालच ही उसको बढ़ावा देगा, आपको बार-बार छूने और नुकसान पहुँचाने में. आप निडर होकर उसे ऐसा ना करने के लिए कहें व अपनी असहमति जताएं व फौरन अपने माता-पिता को उस व्यक्ति के बारे में बताएं। वो ना सिर्फ आपको समझेंगे बल्कि आपको शाबाशी भी देंगे और सुरक्षा भी.

बच्चों आप यह जानकारी भी अपने माता-पिता से ज़रूर साझा करें क्योंकि वे आपके सच्चे मित्र हैं और सदैव आपकी कुशलता चाहते हैं.

मेरा स्वप्न

लेखक पवन कुमार

अचानक मुझे किसी के रोने की आवाज सुनाई दी. मैने कमरे मे इधर-उधर देखा. वहाँ कोई नही था, लेकिन रोने की आवाज अभी भी आ रही थी. तब मैंने खिडकी से बाहर झाँका, तो देखा कि एक परी बाहर बगीचे में बैठी रो रही है. मैं उसके पास गया और उससे पूछा कि तुम कौन हो? यहाँ क्यों रो रही हो? परी ने कहा, "मेरा नाम भाव्या है. मैं परीलोक से आई हूँ. मेरी छड़ी तुम्हारे घर की छत पर बनी चिमनी से अंदर गिर गई है. छड़ी के बिना मैं वापस परीलोक नही जा सकती. मेरी सहायता करो!" बस इतनी सी बात, इतना कह कर मैं घर के अंदर दौड़ा. रसोई घर से छड़ी उठाई और परी को दे दी. छड़ी वापस पाकर परी बहुत खुश हुई. उसने परी लोक के विशेष फल-फूल से भरी हुई एक टोकरी अपनी छड़ी घुमाकर मँगाई और

मुझे दिया. मैने ऐसे फल-फूल पहले कभी नही देखे थे. इन्हे देखकर मैं विस्मित हो गया. मैंने परी को धन्यवाद दिया. परी मुझे धन्यवाद देते हुए उड़ गई. तभी मैं अपने बिस्तर से फर्श पर गिर पड़ा. आश्चर्य से अपनी आँखें मलते हुए कमरे के चारों ओर देखा, लेकिन कोई नहीं था. मै समझ गया कि मैं स्वप्न देख रहा था. मुझे फूलों की खुशबू अभी भी महसूस हो रही थी.

आजादी के दीवाना - सुभाष चंद्र बोस

(23 जनवरी सुभाष चंद्र बोस जयंती पर विशेष)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

नेताजी सुभाष चंद्र बोस के जनम 23 जनवरी 1897 में उड़ीसा के कटक शहर में एक बंगाली परिवार में होय रिहिसे. एकर बाबूजी के नाँव श्री जानकी नाथ बोस अउ दाई के नाँव श्रीमती प्रभावती रिहिसे. एकर बाबूजी ह कटक शहर के जाने माने वकील रिहिसे.

पढ़ई - लिखई - सुभाष चंद्र बोस ह पढ़ई - लिखई में बहुत हुशियार रिहिसे. वोला पढ़े लिखे के अब्बड़ सँउख रिहिसे. प्राथमिक शाला ल वोहा कटक शहर में पूरा करीस हे. ओकर बाद कालेज ल कलकत्ता में जाके पूरा करीस हे. अंग्रेजी शासन काल में पढ़ई - लिखई करना बहुत कठिन काम राहय, फेर सुभाष चंद्र बोस ह हार

नइ मानीस, अउ मन लगा के पढ़ई करत रिहिसे. भारतीय प्रशासनिक सेवा (इंडियन सिविल सर्विस) के तैयारी करे बर ओकर दाई - ददा ह इंग्लैंड भेज दीस. इंग्लैंड के कैंम्ब्रिज विश्व विद्यालय में पढ़ के सिविल सर्विस के परीक्षा में बहुत बढ़िया अंक से पास होगे, अउ नौकरी करे ल धरलीस.

<u>राजनीति में प्रवेश</u> - वो समय अंग्रेज मन के अत्याचार ह बढ़ गे रिहिसे अउ जगा-जगा आजादी बर आंदोलन चलत रिहिसे. तब सन 1921 में सुभाष चंद्र बोस ह अपन नौकरी ल छोड़ के भारत में आ गे.
इंहा आ के भारतीय राष्ट्रीय कांग्रेस के साथ जुड़गे अउ आजादी के आंदोलन में शामिल होगे. सुभाष चंद्र बोस ह महात्मा गाँधी के अहिंसा वादी विचार से सहमत नइ रिहिसे. ओकर कहना राहय के अहिंसा से या हाथ जोड़ के भीख मांगे ले आजादी नइ मिले. आजादी पाय बर क्रांतिकारी कदम उठाय ल परही. इही मतभेद के सेती महात्मा गाँधी अउ सुभाष चंद्र बोस अलग- अलग होगे. महात्मा गाँधी नरम दल के नेता रिहिसे अउ सुभाष चंद्र बोस ह गरम दल के नेता. सुभाष चंद्र बोस ह नेताजी के नाम से प्रसिध्द होगे. सबले पहिली गाँधी जी ल राष्ट्रपिता कहिके नेता जी ह संबोधित करे रिहिसे.

<u>आजाद हिन्द फौज के गठन</u> -भारत माता ल अंग्रेज मन के गुलाम ले स्वतंत्र कराय बर नेताजी ह "आजाद हिन्द फौज" के गठन करीस. नवयुवा लड़का - लड़की ल फौज में भरती करीस , अउ अंग्रेज मन खिलाफ आवाज उठाइस. आजाद हिन्द फौज के सभा में अपन भाषण में सुभाष चंद्र बोस ह "तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूँगा" के नारा दीस. तब उँहा बइठे हजारों आदमी मन हम अपन खून दे बर तैयार हन कहिके प्रतिज्ञा पत्र में खून से हस्ताक्षर करके नेताजी ल दीस.

ऐतिहासिक भाषण - रंगून के जुबली हाल में सुभाष चंद्र बोस जी ह जो भाषण दीस वोहा इतिहास के पन्ना में स्वर्ण अक्षर में अंकित हो गे. वोहा बोले रिहिसे - स्वतंत्रता संग्राम के मोर साथियों स्वतंत्रता बलिदान चाहथे. आप सब आजादी बर बहुत त्याग करे हो, फेर अभी प्राण के आहुति देना बांचे हे. आजादी पाय बर आज अपन सिर ल फूल के जइसे चढ़ा देने वाला पुजारी के जरुरत हे. जे अपन सिर काट के स्वाधीनता के देवी ल भेंट चढ़ा सके. तुमन मोला लहू दो अउ मेंहा तुमन ल आजादी देहूँ. लहू एक - दू बूँद नहीं अतका लहू चाहिए के एक महासागर बन जाय, अउ वो महासागर में ब्रिटिश साम्राज्य पूरा बूड़ जाय. ब्रिटिश साम्राज्य के अंत हो जाय.

नेताजी के अंतिम यात्रा - 18 अगस्त सन 1945 के नेताजी हवाई जहाज से सिंगापुर से बैंकाक जावत रिहिसे. वो जहाज ह दुर्घटना ग्रस्त होगे. ओकर बाद ले सुभाष चंद्र बोस के पता नइ चलीस. सुभाष चंद्र बोस के मृत्यु ह आजतक अनसुलझा रहस्य बन गेहे. कई झन ह दुर्घटना में मरगे कहिथे अउ कई झन येला माने बर तैयार नइहे. देश के अलग- अलग जगा नेताजी ल देखे के दावा करे जाथे. फैजाबाद के "गुमनामी बाबा" से ले के छत्तीसगढ़ के रायगढ़ जिला में नेताजी के रहे के दावा करथे. छत्तीसगढ़ में तो सुभाष चंद्र बोस के मामला राज्य सरकार तक घलो गेहे, फेर राज्य सरकार ह येला हस्तक्षेप के योग्य नइ मान के मामला के फाइल ल ही बंद कर दीस.

कहानी पूरी करो

पिछले अंक में हमने आपको यह अधूरी कहानी पूरी करने के लिए दी थी -

अनोखी तरकीब

बहुत पुरानी बात है. एक अमीर व्यापारी के यहाँ चोरी हो गयी. बहुत तलाश करने के बावजूद सामान न मिला और न ही चोर का पता चला. तब अमीर व्यापारी शहर के काजी के पास पहुँचा और चोरी के बारे में बताया.

सब कुछ सुनने के बाद काजी ने व्यापारी के सारे नौकरों और मित्रों को बुलाया. जब सब सामने पहुँच गए तो काजी ने सब को एक-एक छड़ी दी. सभी छड़ियाँ बराबर थीं. न कोई छोटी न बड़ी.

सब को छड़ी देने के बाद काजी बोला, "इन छड़ियों को आप सब अपने अपने घर ले जाएँ और कल सुबह वापस ले आएँ".

इस कहानी को बहुत से लोगों ने पूरा करके भेजा है. उसमें से कुछ हम नीचे दे रहे हैं.

दिलकेश मधुकर व्दारा पूरी की गई कहानी

काजी ने कहा कि यह छड़ी जादुई छड़ी है. जिसने भी चोरी की है उसकी छड़ी रातभर में एक उंगली बढ़ जाएगी. अगले सुबह सभी नौकर अपने अपने छड़ी के साथ उपस्थित हुए. काजी ने सभी की छड़ियां ले ली और चोर को पकड़ लिया. काजी ने कहा कि यह चौकीदार ही चोर है. यह बात सुनकर सभी अचम्भित भाव से काजी की ओर देखने लगे. अमीर व्यापारी ने पूछा आपको कैसे पता चला? तब काजी ने कहा कि चौकीदार की छड़ी एक उंगली छोटी है. इसने सोचा कि यह जादुई छड़ी अपने आप बढ़ जाएगी जिससे वह पकड़ में आ जाएगा. यह सोचकर चौकीदार ने छड़ी को काट दिया. यह छड़ी कोई जादुई छड़ी नहीं है. यह साधारण छड़ी है. चोर को पकड़ने के लिए मैंने यह तरकीब निकाली थी. आखिरकार चोर पकड़ा गया. चौकीदार पकड़े जाने पर व्यापारी और काजी से क्षमा मांगी और पूरा धन यथावत वापस कर दिया. व्यापारी ने काजी को धन्यवाद दिया.

डॉ॰ माया गुप्ता व्दारा पूरी की गई कहानी

क़ाज़ी ने यह भी कहा, "मैंने सभी को समान लंबाई की छड़ी दी है। जिसने चोरी की है उसकी छड़ी सुबह तक दो इंच लंबी हो जाएगी.'' व्यापारी के सभी मित्र व नौकर छड़ी लेकर अपने-अपने घर चले गए और आराम से सो गए. व्यापारी के ही एक नौकर ने चोरी की थी. उसने छड़ी ले जाकर अपने घर में रख दी और सोने की कोशिश करने लगा. किन्तु उसे नींद नहीं आ रही थी. उसे डर था कि उसकी छड़ी रात भर में ज़रूर दो इंच लंबी हो जाएगी. काफी देर करवटें बदलने और सोच विचार करने के बाद उसे एक उपाय सूझा. यदि मैं अपनी छड़ी को काटकर दो इंच

छोटी कर दूँ तो मेरी छड़ी भी सबके बराबर ही रहेगी, बड़ी नहीं, और मेरी चोरी पकड़ी ही नहीं जाएगी. वह छड़ी को दो इंच काटकर वह चिंता मुक्त होकर सो गया. अगले दिन क़ाज़ी ने सबकी छड़ी नापी. चोर की छड़ी दो इंच छोटी निकली. इस प्रकार क़ाज़ी ने अपनी बुध्दिमानी से चोर को पकड़ लिया.

अगले अंक के लिये अधूरी कहानी - मालपुए

लेखक - गुलजार बांधे

एक बार की बात है एक गांव में एक बूढ़ा आदमी रहता था. एक दिन वह जंगल में लकडी काटने गया. लकड़ी काटने के बाद वह घर चलने लगा. चलते-चलते वह बहुत थक गया. तभी उसे एक आदमी मिला. बूढ़े ने उस आदमी से कहा - बेटा तुम इस लकड़ी के गट्ठर को घर पहुंचा दो तो तुम्हे एक चीज़ दूंगा.

उस आदमी ने लकड़ी का गट्ठर बूढ़े के घर पहुंचा दिया. बूढ़े बाबा ने उस आदमी को मालपुए दिए. फिर बूढ़े ने उस आदमी को बताया कि झाड़ी के पीछे एक गुफा है जिसमें तीन बौने रहते हैं. उसने कहा कि उन बौनो को मालपुए बहुत पसंद है. बूढ़े ने कहा कि मालपुए उन बौनों को दे देना. वे तुम्हे एक चक्की देंगे जिससे तुम अमीर बन जाओगे.

इस मज़ेदार काहनी आपको पूरा करके हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दीजिये. अच्छी कहानियां हम अगले अंक में प्रकाशित करेंगे.

चित्र देखकर कहानी लिखो

पिछले अंक में हमने आपको कहानी लिखने के लिये यह चित्र दिया था -

इस चित्र पर हमें अनेक कहानियां मिली हैं जिनमें से कुछ को हम यहां प्रकाशित कर रहे हैं.

दो खरगोश

लेखिका - सृष्टि मधुकर

एक जंगल में दो खरगोश रहते थे. उनमें से एक का रंग सफेद था और दूसरे का रंग भूरा था. एक दिन दोनों जंगल जा रहे थे. तभी भूरे खरगोश को एक तुरही मिली. सफेद खरगोश ने तुरही को देखकर कहा इसे फेंक दो, हमारे किसी काम का नहीं. भूरे खरगोश ने कहा - हर चीज किसी ना किसी काम की तो होती ही है. यह भी किसी काम आ ही जाएगी. दोनों खरगोश तुरही के साथ जंगल में आगे बढ़ चले. तभी उन्हें ऊंट का एक बच्चा मिला जो उदास लग रहा था. सफेद खरगोश ने ऊंट के बच्चे से पूछा क्या हुआ तुम इतने उदास क्यों हो? ऊंट के बच्चे ने कहा मैं खो गया हूं और अपने घर से बहुत दूर भटक कर यहां जंगल में आ गया हूं. ऊंट के बच्चे को उदास देखकर भूरे खरगोश ने तुरही पर एक गाने की धुन बजाई. गाना सुन का छोटे ऊंट को अच्छा लगा. और फिर वह अपना घर ढूंढने निकल पड़ा.

दोनों खरगोश तुरही के साथ जंगल में आगे बढ़ चले. कुछ आगे बढ़ते ही जोरों की बारिश शुरु हुई. आसपास कोई बड़ा छायादार पेड़ भी नहीं था. दोनों खरगोश बारिश में भीगने लगे. उसी समय भूरे खरगोश ने छाते की तरह तुरही को अपने ऊपर कर लिया. वहीं सफेद खरगोश बारिश में भीगता हुआ आगे चला.

कुछ दूर आगे बढ़ने पर दोनों को एक नदी मिली. सफेद खरगोश सोच में डूबा हुआ ही था कि नदी कैसे पार करें? तभी भूरे खरगोश ने कहा चलो इस तुरही पर बैठकर नदी पार करते हैं. नों ने तुरही पर बैठकर नदी पार कर ली.

नदी के उस पार फिर से घना जंगल शुरू हो गया और अंधेरा भी घिर आया. तभी पास से लकड़बग्घा की आवाज सुनाई दी. दोनों खरगोश डर गए और भागकर एक बिल में छुपने की कोशिश की. लेकिन लकड़बग्घा उनकी गंध सुंघता हुआ पास आ गया. तभी भूरे खरगोश ने तुरही को जोर से बजाया. तुरही की आवाज सुनकर लकड़बग्घा डर गया कि कोई भयानक जानवर अंदर है और वह भाग गया. इस तरह तुरही से खरगोश ने अपनी जान बचाई.

<u>चिन्टू खरगोश</u>

लेखिका - सेवती चक्रधारी

चिन्टू खरगोश बड़े मजे से अपनी माँ के साथ रहता था परन्तु वह बहुत ही शरारत करता था हमेशा उछल कूद करता था. माँ हमेशा चिन्टू को समझाती कि बेटा! ज्यादा उछल कूद मत किया कर चोट लग जायेगी. माँ को हमेशा उसकी चिन्ता सताती रहती थी.

एक दिन चिन्टू माँ के साथ नदी के किनारे घास खा रहा था. आदत से मजबूर चिन्टू ने फिर से उछल कूद शुरू कर दी. माँ ने उसे शांत रहने को कहा पर चिन्टू कहां सुनता था.

अचानक चिन्टू शिकारी के व्दारा बिछाए गए जाल मे फंस गया. वह छटपटाने लगा और रोते हुए कहने लगा - माँ मुझे बचाओ. माँ घबराकर इधर - उधर देखने लगी कि क्या करूँ. पास मे ही बिल के अंदर से एक चूहा यह सब देख रहा था. उसे

चिन्टू पर दया आ गई. वह बाहर आया और जाल कुतरते हुए बोला कि - चिन्टू माँ की बात सुना करो. माँ ने देखा कि शिकारी बहुत करीब आ चुका था. चूहे ने जैसे ही पूरा जाल कुतरा, माँ ने उसे धन्यवाद दिया. इधर शिकारी और करीब आ चुका था. माँ तरकीब निकालने लगी कि शिकारी से कैसे बचे? माँ ने पास ही रखी तुरही को उठाया और चिन्टु को लेकर नदी मे उतर गई और तुरही के सहारे नदी पार कर ली. शिकारी हाथ मलता हुआ देखता रहा गया. चिन्टू ने माँ से वादा किया कि अब से वह ज्यादा उछल कूद नही करेगा. इस तरह माँ ने अपनी व चिन्टू की जान बचाई.

अब नीचे दिये चित्र को देखकर कहानी लिखें और हमें dr.alokshukla@gmail.com पर भेज दें. अच्छी कहानियां हम किलोल के अगले में प्रकाशित करेंगे.

कहानी उत्सव

उद्देश्य: बच्चों में सुनने और बोलने के कौशलों का विकास करना. बच्चों को इस प्रकार प्रेरित करना कि सुनने और बोलने के कौशल, पढ़ने और लिखने के कौशलों में हस्तानांतरित हो सकें. सामुदायिक ज्ञान का स्कूलों से जुड़ाव. कहानियों को स्कूलों में एक शैक्षिक संसाधन के रूप में उपयोग करने को प्रोत्साहन देना. कहानी कथन कला को प्रोत्साहित करना. कहानियों का स्कूली विषयों से जुड़ाव देख पाना.

कक्षा / स्तर: कक्षा 1 से आगे.

विषय: प्राथमिक स्तर पर सभी विषय इस गतिविधि से जुड़े हैं.

क्रिया / गतिविधि: समुदाय के सदस्य स्कूल में 8-10 बच्चों के समूह के साथ बैठकर उन्हें समुदाय के संस्कृति से संबंधित कहानी सुनाते हैं. बच्चे अपनी समझ के अनुसार प्रश्न पूछते हैं. जरूरत हो तो कहानीकार (समुदाय के सदस्य) कहानी

को दो या तीन बार सुनाते हैं. कहानी सुनने के बाद बच्चे कहानी को हिन्दी / समुदाय की भाषा में लिखते हैं फिर अपनी कल्पनाशक्ति से कहानी की घटनाओं और पात्रों का चित्रण एक चित्र में करते हैं. लिखित कहानी और संबंधित चित्र स्कूल में जमा किया जाता है. इसकी मदद से शिक्षक चाहें तो अलग-अलग विषयों को जोड़कर बच्चों के कौशलों का विकास कर सकते हैं.

यह कार्य 2014-2017 के दौरान राज्य के सरगुजा, बस्तर, महासमुंद और कबीरधाम जिलों के 100 स्कूलों में सफलतापूर्वक किया गया है. इस दौरान करीब 500 कहानीकारों ने अपनी सहभागिता दी. 100 स्कूलों के 450 शिक्षक और इन वर्षों के दौरान लगभग 25000 बच्चों ने भाग लिया. करीब 5000 कहानियों का संग्रह किया गया.

लाभ: कल्पनाशक्ति को बढ़ावा मिलता है. सुनने का कौशल विकसित और सुदृढ़ होता है. पढ़ने, रचनात्मक लेखन और भाषा के प्रति लगाव उत्पन्न होता है. शब्दावली, समझ (बोध) घटनाओं के क्रम और कहानी कहने जैसे भाषायी कौशलों का विकास होता है. कहानी में उपयोग की गयी भाषा के शब्दों और सामान्य अनुभव से बच्चों के एक समुदाय का गठन होता है.

अनुसरण की शिक्षा हो

लेखक - विकास कुमार हरिहारनो

अनुसरण ही शिक्षा हो
सारी दुनिया ऐसे ही बढ़ी
कुछ आप बढ़े, कुछ हम भी बढ़े
जैसा देखा वैसा सीखा,
कुछ बने बनाए ही सीखे
कुछ सीख के सीख लिया हमने
बहुतों को देख के बदला है
अनुसरण की शिक्षा हो
अनुसरण ही शिक्षा हो

आई परिवर्तन की अब बेला
चलो नींव की इमारत गढ़ते हैं
भावी पीढ़ी चाहे जैसा
वैसा खुद को बदलते हैं
अनुसरण की शिक्षा हो
अनुसरण ही शिक्षा हो

करो योग -रहो निरोग

लेखक - गोपाल कौशल

भारत की शान है योग
गीता,वेद पुराण है योग ।
सबका कल्याण है योग
भारत की जान है योग ।।

संस्कृति की आन है योग
प्रकृति का वरदान है योग ।
शरीर की स्फूर्ति है योग
वीरों की शक्ति है योग ।।

निरोगता का राज है योग
मन की एकाग्रता है योग ।
संतो की साधना है योग
सफलता की कुंजी है योग ।।

कहना तू मान ले

लेखक - अरविन्द वैष्णव

हम बदलेंगे युग बदलेगा
कहना तू मान ले
ओ प्यारे भारत के बच्चे
परिवर्तन पहचान ले

उत्पादन गर ज्यादा हो
भाव सदा गिर जाते हैं
एक्स में हो परिवर्तन तो
वाय भी बदल जाते हैं

सूरज आता गर्मी लाता
चंदा लाता शीतलता
आओ बच्चों तुम्हें सीखा दूँ
मौसम और जलवायु की गाथा

ताप बढ़े तो बर्फ पिघलती
ठंड बढ़े तो पानी जमता
हलचल से तुम मत घबराना
राह छोड़कर मत तुम जाना

जीवन मूल्यों को "अरविंद"
हरदम तुम जीवन में रखना

कोयल

लेखक - रघुवंश मिश्रा

मधुर स्वर घुल गया

बसंत ऋतु के आने पर

निक्कू, निक्की झूम उठे

कोयल के गीत गाने पर

कोयल का गीत

लगता है बड़ा प्यारा

आम्र कुंज में छिपकर

गाये दिन सारा

खुलती है नींद जब

बसंत के भोर में

लगे प्रकृति सराबोर है

कोयल की कूक की शोर में

मन को मोह लेती है

कोयल की प्यारी आवाज

सबसे न्यारा होता है

प्यारी कोयल का अंदाज

गुलाब

लेखक - नेमीचंद साहू

कॉटो के बीच रहकर,

हरदम रहते है लाजवाब !

जीवन को खुशहाल बनाते

नाम है जिनका गुलाब !

प्रेम की है यह निशानी,

पल -पल करते है कमाल !

दुनिया में रंग भरते ये,

कभी पीले कभी लाल !

फूलों का है यह राजा,

बगिया की है ये शान !

करते सभी को आकर्षित,

गरीब हो या धनवान !

राजा-महाराजाओं का,

शौक में है बेमिसाल !

कभी हाथ कभी कोट में

लगाते जवाहर लाल !!

चंद्रमा

लेखक - रघुवंश मिश्रा

ग्रहों के जो चक्कर लगाये

उपग्रह वह कहलाता

पृथ्वी के उपग्रह में

चंद्रमा का नाम आता

कृष्ण पक्ष में चंद्रमा

धीरे-धीरे घटता जाता

शुक्ल पक्ष में यह

बढ़ने के क्रम में आता

अपनी धुरी पर घूमने से

यह स्थिति होती है निर्मित

चौदह दिन का समय

दोनों पक्षों में घूमने का है निश्चित

कृष्ण पक्ष में अमावस्या

शुक्ल पक्ष में पूर्णिमा आती

इस तरह प्रत्येक माह,

बारी-बारी से दोहराती

चंद्रमा को प्रकाश

सूरज से है मिलता

सामने आने के अनुपात में

छिपता, और है दिखता

जाड़े का मौसम आया

लेखिका - सेवती चक्रधारी

जाड़े का मौसम आया,
सूरज सबको भाया ।

सर-सर करती हवा ने,
तन- मन कंपकंपाया ।
नन्ही - नन्ही ओस की बूंदे,
मौसम ने बरसाया ।

छाछ -लस्सी दूर हो गई,
चाय पे जी ललचाया ।
घर मे रखे ऊनी स्वेटर,
अब सबको पहनाया ।

रंग - बिरंगे फूल खिल गये,
भौंरा गुनगुनाया ।
खेत - खलिहान मे फसल देखकर,
हर किसान मुसकाया ।

जोकर

लेखक - संतोष कुमार साहू (प्रकृति)

१

सबके मन को भाता जोकर
सबको खूब हंसाता जोकर
कभी पूंछ से कभी बाल से
कभी हाथ से कभी पैर से
ऐसा खेल दिखाता जोकर

२

कभी सामने कभी बगल में
छुप-छुप कर है गाता जोकर
सर्कस और नाटक में सबको
कलाबाज़ियां खाता है जोकर
ऐसा खेल दिखाता जोकर

३

दुख में सुख में सबके देखो
आंसू खूब बहाता जोकर
जपानी और हिन्दूस्तानी
बहरूपिया बन जाता जोकर
ऐसा खेल दिखाता जोकर

४

खुद का गम पी जाता जोकर
औरों को बहलाता जोकर
जोकर का जीवन जोकर है
जोकर बन रह जाता जोकर
ऐसा खेल दिखाता जोकर

तिरंगा

लेखिका - कनकलता गहलोत

तीन रंगों से सजा तिरंगा

सबके मन को भाये

आओ सब जयकार करें

प्यारा तिरंगा फहरायें

केसरिया से सीखें त्याग

देश के लिए मर भी जायें

सफेद रंग शांति का प्रतीक

चमन में शांति फैलायें

हरा रंग प्रकृति की शोभा

मेरा देश सदा मुस्कुराये

आओ सब जयकार करें

प्यारा तिरंगा फहरायें

देने का सुख

लेखिका - माया गुप्ता

चिड़िया बोली चिड्डे से,
आज नया कुछ खाएंगे,
कीड़े खाकर बोर हो गई
खिचड़ी आज पकाएंगे

दाल के दाने मुझे मिले हैं,
ढूंढ़ कहीं से चावल लाओ
गाजर, गोभी, मटर अगर हो सके
कहीं से लेकर आओ

चिड्डा तब फिर रुक ना पाया
ढूंढ़ कहीं से चावल लाया
चूल्हा में फिर आग जलाई
बढ़िया खिचड़ी मस्त पकाई

तभी उधर एक चूहा आया
भूखा था पर कुछ शरमाया
चिड़िया बोली तुम भी आओ,
संग हमारे खाना खाओ

फिर चिड़िया ने युक्ति लगाई
तोड़ तीन पत्ते ले आई
गरमा – गरम महकती खिचड़ी
तीनों ने मिल – जुल कर खाई

खाना सदा बांट कर खाना
आदत है यह कितनी अच्छी
देने में ही सुख़ मिलता है
बात कहूँ मैं सच्ची सच्ची

पेड़ लगाओ (चौपाई)

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

मिल जुलकर सब पेड़ लगाओ । ताजा ताजा फल को खाओ ।।
देती है यह सबको छाया । अदभुत इसकी है सब माया ।।

फूल पान औ फल को देती । बदले हमसे कुछ ना लेती ।
पत्ती जड़ से औषधि बनती । बीमारी को झट से हरती ।।

मिलकर पौधे रोज लगाओ । शुद्ध हवा तुम निशदिन पाओ ।।
सुबह शाम सब पानी डालो । बैठ छाँव में अब सुस्ता लो ।।

बैठे डाली पंछी गाये । मीठे मीठे फल को खाये ।
थककर राही नीचे आते । बैठ छाँव में अति सुख पाते ।।

जंगल झाड़ी कभी न काटो । भाई भाई इसे न बाटो ।।
मिलकर सारे पेड़ लगाओ । धरती को तुम स्वर्ग बनाओ ।।

भारत भूमि

लेखक - चन्द्रहास सेन

नील गगन के नीचे है, अपनी धरतीमाता
इससे बढ़कर नहीं कोई, जग में रिश्ता नाता

भारत भू कहते हैं इसको, इसकी छाया में हम पलते
इसके पावन जल को पीकर, नित्य रहें हँसते और बढ़ते

पूरब मे है नागा साकी पश्चिम में है विंध्य सतपुड़ा
दक्षिण केरल पायल इसकी, उत्तर हिमालय से जुड़ा

यहां बही है गंगा यमुना, सतलज और सिंधु की धारा
जिसके चरणों में खेला है भारत का हर राजदुलारा

आओ भाई बहनों, हमको माँ की रक्षा करनी है
इसकी रक्षा की खातिर ही अब जीवन की हर करनी है

मत काटो मत बांटो

लेखिका - रीता माने

आपसे मे मिल-जुलकर रहना सीखो
वन भी अपना तन भी अपना
देश भी अपना, पर्यावरण भी अपना
काटोगे बांटोगे तो जाओगे कहां
घर भी अपना देश भी अपना
मत काटो...

तन में बहता खून भी एक रंग का
बन की हरियाली भी एक रंग की
सूरज की धूप भी एक रंग की
बरसात का पानी भी एक रंग का
फिर आपसे के विचार भिन्न क्यों
काटोगे बांटोगे तो जाओगे कहां
घर भी अपना देश भी अपना
मत काटो...

मदारी

लेखिका - प्रिया देवांगन "प्रियू"

बंदर आया बंदर आया।
एक मदारी उसको लाया।।

बंदर को वह बहुत नचाया।
बच्चों से ताली बजवाया।।

नया नया है खेल दिखाया।
बच्चों को वह खूब हँसाया।।

रस्सी पर चलकर दिखाया।
अपने संग बंदरिया लाया।।

नया नया करतब सिखलाया।
बच्चों को है खूब भाया।।

माँ

लेखिका - पूर्णिमा कैवर्त

तू ममता की खान थी माँ
संस्कार की गान थी माँ

मुझे हँसकर पाली थी
पल-पल मुझे संभाली थी

मेरी नित्य भलाई की थी
जपती रहती माला थी

जान और जहान है माँ
तू मेरी पहचान है माँ

कष्ट भले ही सहती थी
किन्तु नहीं कुछ कहती थी

जब तक नहीं पहुंचती थी घर
बाट जोहती रहती थी

रखती कितना ध्यान थी माँ
मेरे लिए महान थी माँ

पढ़ती बढ़ती जाऊँगी
सीख सभी अपनाउंगी

तेरी पूजा करती हूँ मैं
तू मेरी भगवान है माँ

माँ

लेखक - सुन्दर लाल डडसेना "मधुर"

ममता की मूरत, प्रेम का सागर है माँ
सब कुछ धारण करे, ऐसा गागर है माँ
घर-घर में रोशन करे, नव सबेरा है माँ
प्रेम से बसने वाली, घर का बसेरा है माँ
प्रेम त्याग दया का संगम,त्रिवेणी है माँ
पवित्रता का मंदिर, बुलंदियों की द्रोणी है माँ
अटल में हिमालय, फूलों सी कोमल है माँ
गीतकार का गीत, शायर की ग़ज़ल है माँ
ममता की रेवड़ी बांटती, आशीषों की बरसात है माँ
कुदरत का नया करिश्मा, उत्तम जात है माँ
उपवन का मदमस्त महकता, सुंदर गुलाब है माँ
राज सीने में छिपाने वाली, सीप सैलाब है माँ
कवि की आत्मा की गहराई, नापने वाली कविता है माँ
प्रेम के झरोखे में झरने वाली, सरिता है माँ
रिश्तों को अनोखी बंधन में, बाँधने वाली लता है माँ
प्रभु की अनोखी कृति, व्दितीय गीता है माँ

मुस्कुराना अच्छा लगता है

लेखक - अरविन्द वैष्णव

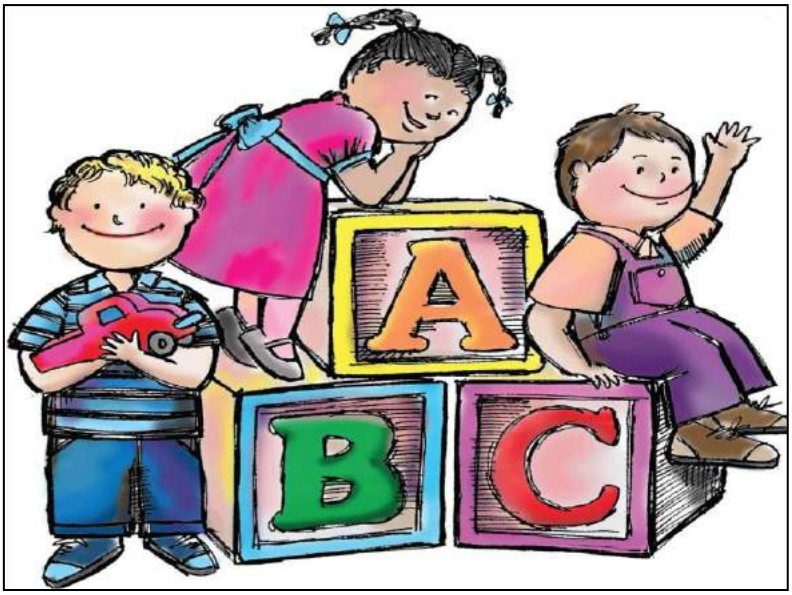

बच्चों तुम्हारा मुस्कुराना अच्छा लगता है
मुझे पढ़ाना और सिखाना अच्छा लगता है

ज्ञान की बाते बताकर प्रेरक गीत सुनाऊँ
नित नवाचार से साज सजाना अच्छा लगता है

कक्षा छोड़ मारूं गप रास नही आता है
तुम सबके साथ रहना अच्छा लगता है

बारिश में टपकती छत से मन व्यथित होता है
प्रयास सुंदर कर सकूं तो अच्छा लगता है

डांट कर फिर हँसाना भाव यही होता है
तुम सबको आगे लाना अच्छा लगता है

कच्ची मिट्टी से बने तुम भारत के भविष्य हो
"अरविंद" विज्ञान की बाते बताना अच्छा लगता है

मन मचलाता है हर नया साल

लेखक - जी आर टण्डन छत्तीसगड़ीया

माँ के दूध का ऋण
परिवार का मेरा एक दिन
स्मृति बनकर रहता है
अच्छा हो या बुरा हाल
मन मचलाता है हर नया साल

स्वागत को आतुर निकले शशि
सितारों से चांदनी की हंसी
आसमां को सबने मिलकर चमकाया
एक जनवरी उन्नीस सबके मन को भाया

नये साल का नया सपना
प्रेम और भाईचारे का छोटा सा घर हो अपना
मेरे परिवार के साथ एक मुनिया रहेगी
नारी सम्मान के लिये खूब पढेगी

तट पर न बैठ सागर लहराया
पकड़ ले पतवार जहाज डगमगाया
बैठे की नौका पार नहीं होती
कोशिश करने वालों की हार नहीं होती

वक्त की आवाज का है यह उबाल
मन मचलाता है हर नया साल

मेरा बचपन

लेखिका - तृप्ति शर्मा

मेरा बचपन प्यारा बचपन
पल पल याद तू आता है
सुंदर सपनों सा जीवन वो
पल पल जी ललचाता है

कहां गई मासूम ठिठोली
संग मेरे सखियों कि टोली
बात बात में खूब रूठना
मान भी जाओं अब तुम भोली

प्यारी मधुर तोतली बोली
स्वप्न से सुंदर थी वो टोली
अमरैया में आम तोड़ती
मस्त मेरी सखियों कर टोली

मेरा बचपन प्यारा बचपन
पल पल मुझे लुभाता है

शिक्षक ज्ञान का सागर है

लेखक - श्रवण कुमार साहू"प्रखर"

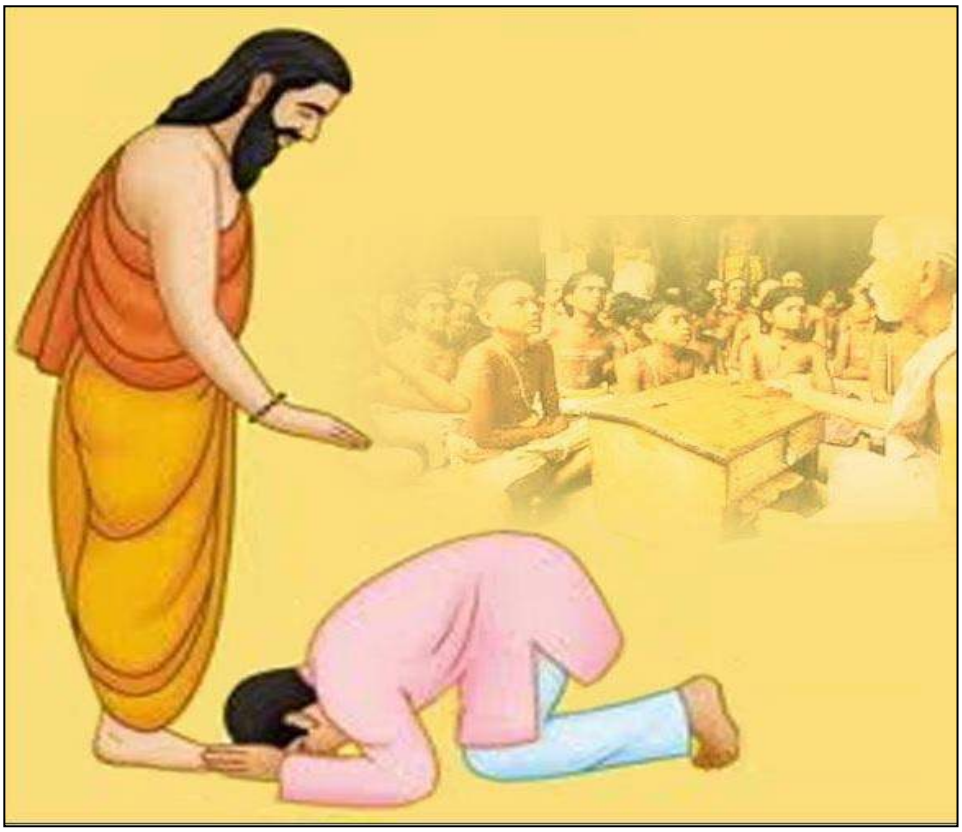

शि

शिक्षक ज्ञान का सागर है
जिसकी महिमा उजागर है
शिष्यों को शीलवान बनाता
वो अनन्त गुणों का सागर है

क्ष

क्षमता, ममता, दया धर्म का
जो जग को पाठ पढाता है
शांति और क्रांति दोनों का
जो स्वयंसिध्द जन्मदाता है

क

कर्मशील, साधक, सुजान वो
जो परहित जीवन जीता है
रामायण सी अमृत वाणी
हर कर्म जिसका गीता है

शिक्षक

क्षण-क्षण करके, समय जोड़ता
कण कण करके, जीवन गढ़ता
पथ पर कितने भी कण्टक हों
अविरल, अविराम है चलता
कहीं क्रांति का ज्वाल वही है
कहीं बना वह सृजन प्रवर्तक
जो वह मार्ग हमे दिखलाए
चलें उसी पर गमन करें
ब्रम्हा, विष्णु, महेश्वर शिक्षक
चलो आज हम नमन करें

हम बच्चे हिन्दुस्तान के

लेखक - प्रमोद दीक्षित 'मलय'

चले बचाने धरती को हम, बच्चे हिन्दुस्तान के ।
बच्चे हम संसार के ।।

कल-कल बहती नदियां हों, जल में पलता जीवन हो ।
और तटों पर कलरव करता, विहग वृन्द मनभावन हो ।
धरती पर पौधे रोपें हम, अपनी मधु मुस्कान के ।
हम बच्चे हिन्दुस्तान के ।

धरती की हरियाली को, हिम से पूरित प्याली को ।
तनिक न घटने देंगे हम, ओजोन परत की जाली को ।
सुमन बिखेरें सकल धरा पर, हम अपने श्रमदान से ।
हम बच्चे हिन्दुस्तान के ।

धरती अपनी माता है, पोषण-प्रेम भरा नाता है ।
देती जल, फल, सब्जी, अन्न, धरती भाग्य विधाता है ।
चलो सजायें धरती माँ को, हम अपने बलिदान से ।
हम बच्चे हिन्दुस्तान के ।

हाय ! तौबा ये पढ़ाई

लेखिका - सेवती चक्रधारी

हाय! तौबा ये पढ़ाई ,
होती इसमे कितनी कठिनाई।
जब गणित को पढ़ने बैठा,
सूत्र मे जा करके मै अटका।
पहाड़ा बनाने का खोजा फंडा,
फिर भी टेस्ट मे मिलता अंडा।
हिन्दी की जब आई बारी,
दुःख होता है मुझको भारी।
मात्राओ का बहा समंदर,
परीक्षा मे कट गए नम्बर।
विज्ञान की तो बात निराली,
संरचना कितनी अजीब वाली।
कीटाणु जीवाणु और विषाणु,
कितने नाम है मै क्या जानु।

सामाजिक में समाया इतिहास,
जिसमें हर युध्द होता खास।
नदी तालाब और झरने,
दिमाग से मिट गए सारे नक्शे।
संस्कृत के ये ति, ता ,अन्ति,
शुध्द उच्चारण हमसे न बनती ।
जो लम्बे से शब्द होते ,
भारी भरकम बोझ से लगते।
इंग्लिश की तो बात ही छोड़ो,
कही अक्षर पकड़ो कही पे छोड़ो।
जब ग्रामर की गहराई जानी,
याद आ गई मुझको नानी।
इन सबसे कोई पीछा छुड़ाये,
पढ़ने-लिखने से हमे बचाये।

One-Two

Author - Sewati Chakradhari

One –Two
Wear a Shoe
Three- Four,
Close the Door
Five- Six,
This is a Stick
Seven-Eight,
Push the Gate
Nine-Ten,
See the Hen.

नववर्ष 2019

लेखक - द्रोण साहू

नववर्ष के नव पल मे,
प्रतिपल मन मे नव हर्ष हो।

उव्दवेलित हो नव चिंतन,
नव प्रस्फुटन नव उत्कर्ष हो।

निर्भय हो चिंतन कर विकसित,
नित नव मंत्र नव विमर्ष हो।

त्याग जीण-शीर्ण पुरातनता,
नव सृजन हेतु नव निष्कर्ष हो।

ऐसा ही हर पल आपका,
मगंलमय यह नववर्ष हो।

जाड़ के महीना

लेखक - महेन्द्र देवांगन माटी

आ गे जाड के महीना, हाथ गोड जुडावत हे ।
कमरा ओढ के बबा ह, गोरसी ल दगावत हे ।
पानी ल छुत्ते साठ, हाथ ह झिनझिनावत हे ।
मुहूं म डारते साठ, दांत ह किनकिनावत हे ।
तेल फुल चुपर के, लइका ल सपटावत हे ।
कतको दवई करबे तब ले, नाक ह बोहावत हे ।
नावा बहुरिया घेरी बेरी, किरिम ल लगावत हे ।
पाउडर ल लगा लगाके, चेहरा ल चमकावत हे ।
गाल मुहूँ चटकत हावय, बोरोप्लस लगावत हे ।
एड़ी हा फाट गेहे, अब्बड़ के पीरावत हे ।
आगे जाड़ के महीना, हाथ गोड़ जुड़ावत हे ।
कमरा ओढ के बबा ह, गोरसी ल दगावत हे ।

<u>नवा साल म</u>

लेखक - श्रवण कुमार साहू"प्रखर"

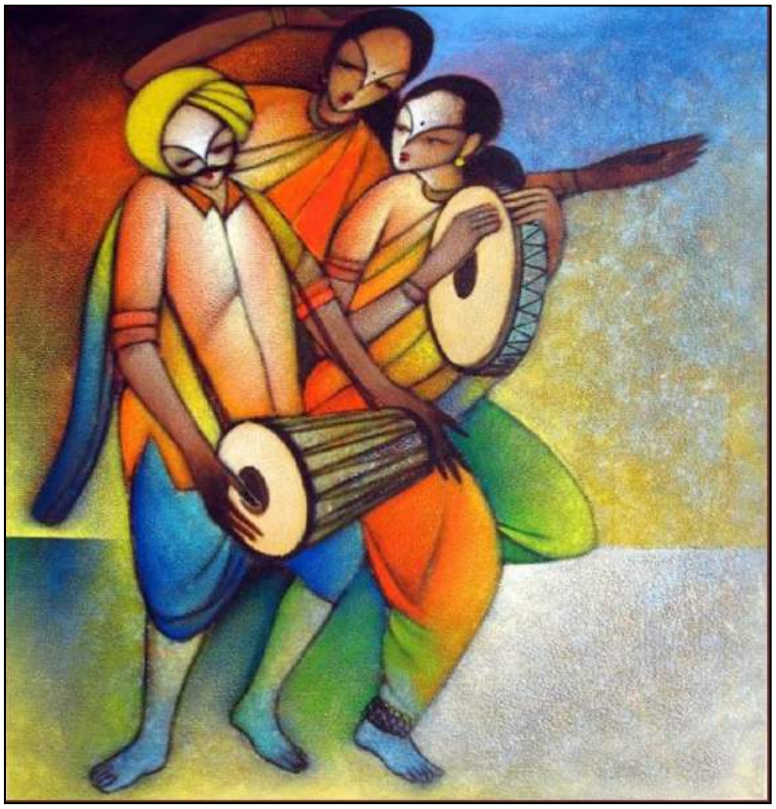

नवा-नवा काम करबो, चलव नवा साल म।
चाहे राहन अमीरी म, या जिंयन तंगहाल म।।

सोवत मनखे मन ल,चलव न जगाना हे।
रोवत सुरतिया ल, चलव न हँसाना हे।।
अपन करम ल करबो,हमन ह हर हाल म।
नवा -नवा काम करबो,चलव नवा साल म।।

बीती बात बिसार के, नवा सोच लाना है।
सुम्मत के रद्दा म, दुनियाँ ल चलाना है।।
हमला नई पड़ना हे, अब फोकट के बवाल म।
नवा-नवा काम करबो, चलव नवा साल म।।

आँखि म देखे सपना ल, हमला अब सजाना है।
दीन, दुःखी, अबला ल, अपन गर लगाना है।
अब नई उलझना है, कोनो फोकट के सवाल म।
नवा- नवा काम करबो, चलव नवा साल म।।

दिन बदले, महीना, या बदले कोनो साल।
हर ऋतु, मौसम म, सब रहे खुशहाल।।
सब के सुख खातिर, जुट जाओ न पड़ताल म।
नवा- नवा काम करबो,चलव न नवा साल म।।

किलोल को छापकर बच्चों में नि:शुल्क वितरण

बेलगहना से पुष्पेन्द्र तिवारी जी ने लिखा है - "यह हमारे राज्य की पत्रिका है जिसमें बच्चों के रुचि को ध्यान में रखकर बनाई गई है. इस पत्रिका में बच्चों के लिए बाल कविता कहानियाँ पहेली चित्र एवं गतिविधियाँ भी शामिल हैं जो हम सब इसे ध्यान से पढ़कर सीखते है. इसी क्रम मे हमारी रचना भी शा प्रा विद्यालय बेलगहना की ओर से छपती है. इसकी छायाप्रति निकलवाने की राशि स्वयं के व्यय से करते है. विद्यालय के बच्चे बड़े ही उत्साह से पत्रिका का इंतजार करते हैं और जब पत्रिका आती हैं तो आनंदपूर्वक पढ़ते है."

पुष्पेन्द्र तिवारी जी को हृदय से धन्यवाद.

कला - चित्रकोट जलप्रपात की पेंटिंग

रचनाकार - अनामिका पाण्डे

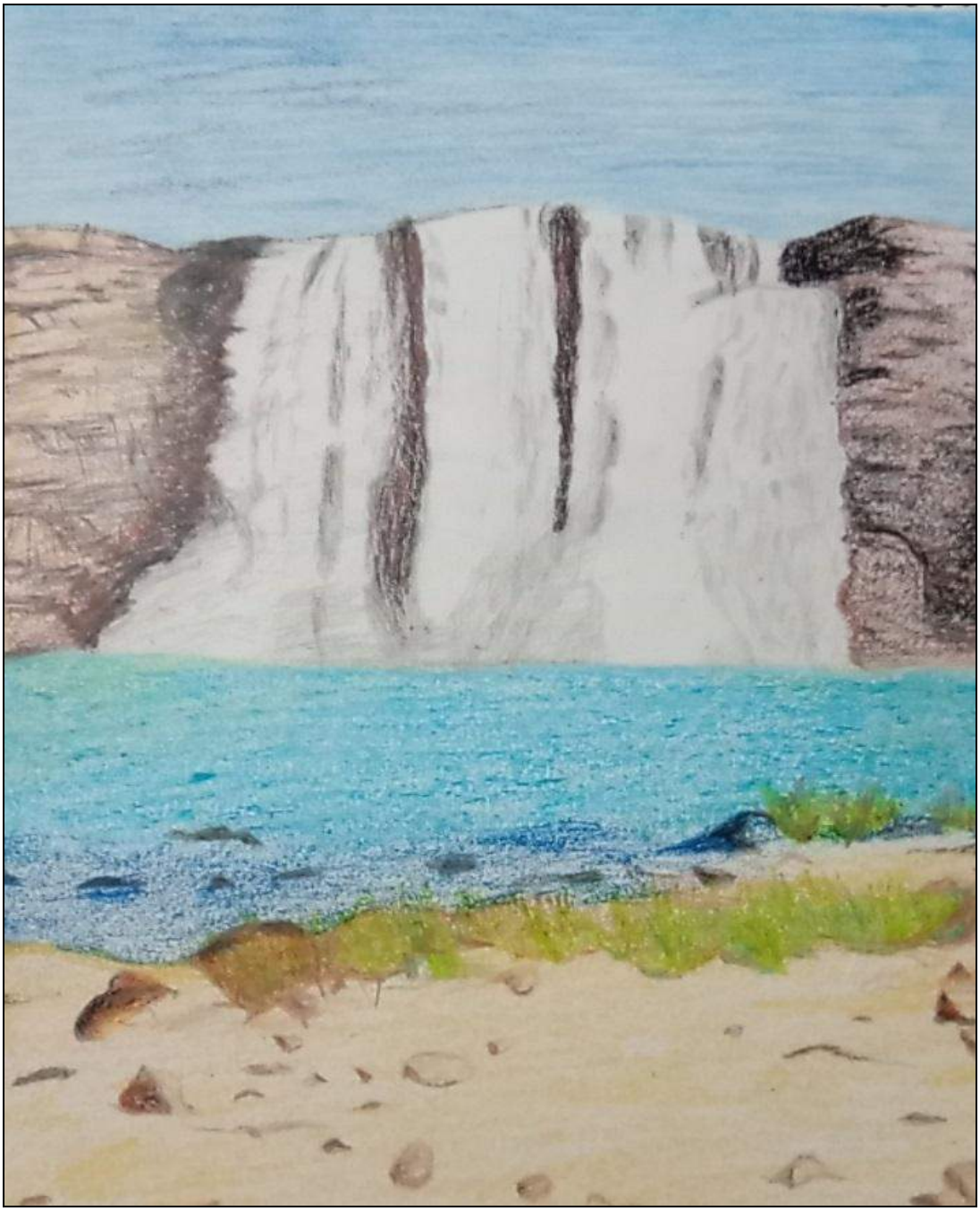

<u>विज्ञान के खेल - घुमाओ और बताओ</u>

रचनाकार - षड प्रकाश कटेन्द्र

आवश्यक सामग्री - खाली पेंट का डब्बा, लकड़ी के भत्ते, कुछ कील, सफेद कागज, मार्कर पेन.

उपयोग विधि -इस सहायक शिक्षण सामाग्री का प्रयोग पढ़ाई को रुचिकर एवं सरल बनाने के लिए किया जाता है. इसे सभी विषयों के लिए बनाया जा सकता है. इसमें घुमाने पर जो आता है बच्चे उसके अनुरूप बताते हैं.

चुटकुले

एक बच्चे ने दूसरे बच्चे से पूछा - क्या तुम चीनी भाषा पढ सकते हो?
दूसरे बच्चे ने कहा - हां , अगर वह हिंदी तथा अंग्रेजी में लिखी हो तो....

पिता (बेटे से) - देखों बेटे , जुआ नहीं खेलते | यह ऐसी आदत हैं कि यदि इसमें आज जीतोगे तो कल हारोगे , परसों जीतोगे तो उससे अगले दिन हार जाओगे.
बेटा - बस , पिताजी ! मैं समझ गया , आगे से मैं एक दिन छौड़कर खेला करूंगा

एक तोता एक कार से टकरा गया, तो उस कार वाले ने उसे उठआ कर पिन्जरा मे डल दिया /दूसरे दिन जब तोते को होश आया, वह बोला,आईला! जेल,कार वाला मर गया क़्या.

छोटी - सी लड़की ने अपनी मां से पूछा - मम्मी , तुमने कहा था ना कि परियों के पंख होते हैं और वह उड़ सकती हैं ना?

मम्मी - हां बेटी , कहा था.

लड़की - कल रात डैडी आया को कह रहे थे कि वह तो परी है. वह कब उड़ेगी मम्मी ?
मम्मी (छोटी सी लड़की से) - सुबह होते ही उड़ जाएगी बेटी.

बच्चों व्दारा बनाई विज्ञान पहेली

प्रेषक - सुनीता टांडे

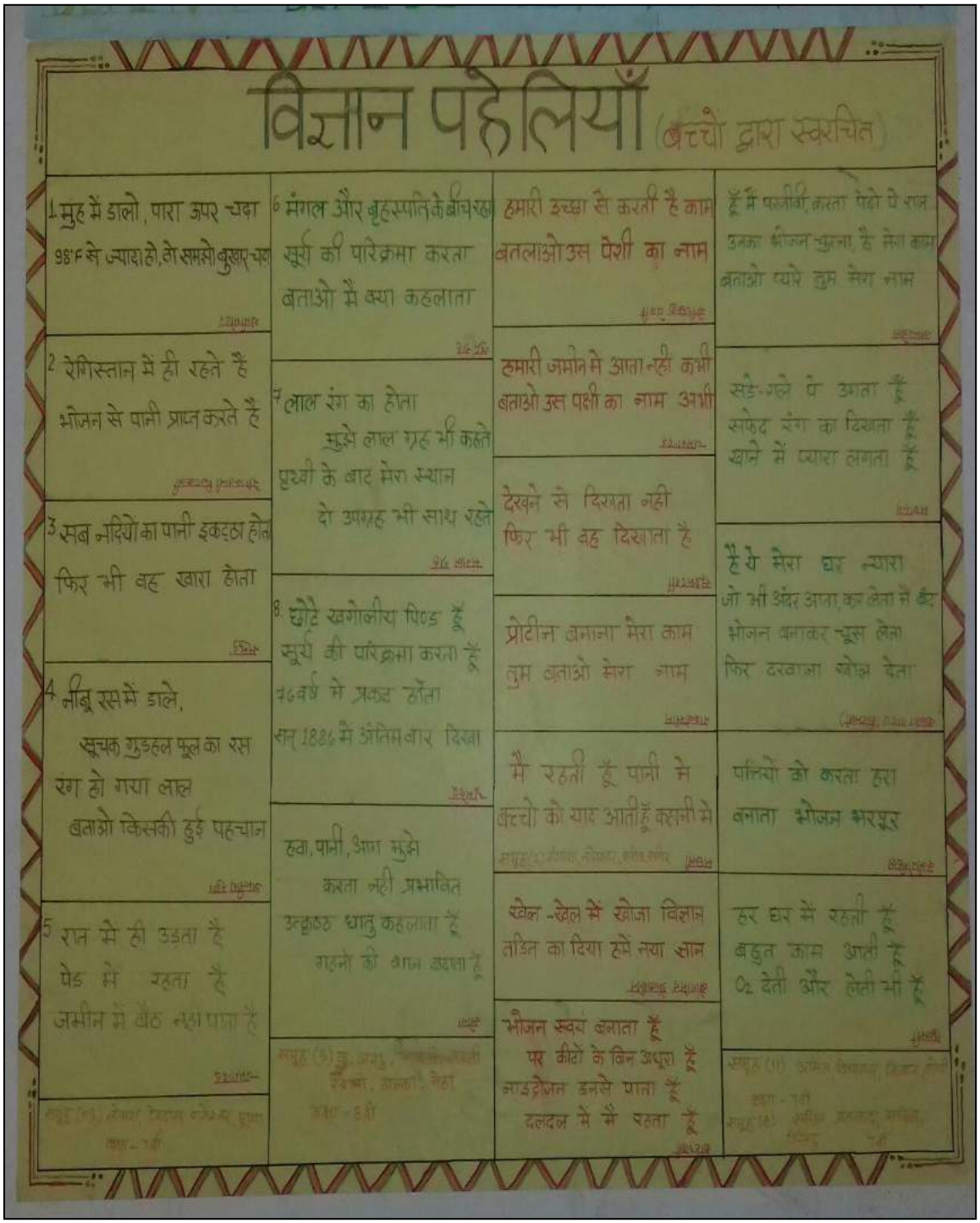

आनलाईन प्रश्नोत्तरी

निर्माणकर्ता - दिलकेश मधुकर

छात्र-छात्राओं और प्रतियोगी परीक्षा की तैयारी कर रहे हैं प्रतिभागियों के लिए एक अनूठी पहल की गई है. यह प्रश्नोत्तरी बनाई गई है. इसके लिए लिंक है - https://sites.google.com/view/navaparakarra/quiz

इसके अतिरिक्ति अन्य प्रश्नोत्तरियां भी हैं - छत्तीसगढ़ ज्ञान प्रश्नोत्तरी - https://testmoz.com/1917410/

विज्ञान प्रश्नोत्तरी 6 - https://testmoz.com/1944876/

विज्ञान प्रश्नोत्तरी 7 - https://testmoz.com/1945102/

विज्ञान प्रश्नोत्तरी 8 - https://testmoz.com/1945760/

सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी - https://testmoz.com/1985837

चित्र पहचान पहेली - https://goo.gl/forms/bx1LnoekZb9wge8P2

आनलाईन सामान्य ज्ञान प्रश्नोत्तरी में शासकीय प्राथमिक, पूर्व माध्यमिक और हाईस्कूल नवापारा कर्रा विकास खंड पाली जिला कोरबा के 60 बच्चों ने परीक्षा दी. जो बच्चे लेपटॉप चलाने से डरते थे उन्होने भी इस परीक्षा में बैठकर अपने डर को हराते हुए उत्कृष्ट स्थान प्राप्त किया. इसका उपयोग आप सब भी आसानी से अपने मोबाइल या लैपटॉप पर इंटरनेट कनेक्शन के साथ कर सकते हैं. यह बहुत उपयोगी है.

भाखा जनउला (छत्तीसगढ़ी शब्द पहेली)

रचनाकार - दीपक कंवर

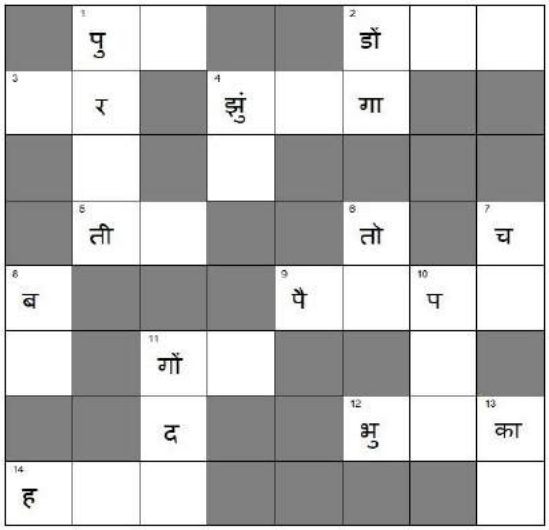

बाएं से दाएं - 1.मशरूम 2.कली 3.मेरा 4.बरबट्टी 5.छ.ग. में महिलाओं का विशेष त्यौहार 9.पायल 11.प्रसिद्ध फूल 12.दीवार का बड़ा छेद 14. छ.ग. में वर्ष का पहला त्यौहार

ऊपर से नीचे - 1.विरासत 2.नाव 4.झुरमुट 6.तुम्हारा 7.चप्पल 8.दादा 10.टमाटर 11.प्याज 13.किसको

उत्तर